॥ श्री महावीराय नमः ॥

जैन
दीपावली पूजन

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य
नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती
अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना

vidya suvrat sangh   vidya ke suvratsagar

कृति	:	जैन दीपावली पूजन
आशीर्वाद	:	आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागरजी महाराज नवाचार्य श्री समयसागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	चातुर्मास २०२४ दमोह (म.प्र.)
संयोजक	:	बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	15/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा० ब्र० संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

स्व.डालचंद जैन की स्मृति में

श्रीमती अमृता जैन

नीरज जैन-श्रीमती मंजू जैन

कु. अग्रणी, अग्रिम जैन

मौसीपुरा वाले दमोह

अन्तर्भाव

नित्योत्सवं मणिमयं निलयं जिनानाम्

जिनशासन में दो प्रकार के पर्व मनाये जाते हैं एक शास्वत पर्व जैसे अष्टमी, चतुर्दशी, दसलक्षण, सोलहकारण, अष्टाह्निका आदि दूसरे नैमित्तिक पर्व जैसे दीपावली, रक्षाबंधन, श्रुतपंचमी आदि। नैमित्तिक पर्व दीपावली जैनों में ही नहीं बल्कि जैनेतर समाज में भी अपनी-अपनी मान्यता के अनुसार देश-विदेशों में मनायी जाती है। इस पर्व की पूजन विधि आदि की व्यवस्थाओं से जो लोग अनभिज्ञ हैं और अपनी सुविधानुसार पूजादि करके अपना काम चला लेते हैं उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए और जिनशासन के माहात्म्य को प्रकाशित करते हुए **परमपूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **जिनशासन प्रभावक, अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज** ने **'जैन दीपावली पूजन'** इस कृति की रचना करके हम सभी साधकों एवं श्रावकों के लिए भगवान् महावीर स्वामी के निर्वाण प्राप्ति और गौतम गणधर स्वामी के केवलज्ञान प्राप्ति के इस नैमित्तिक पर्व पर आराधना करने का नया आयाम दिया है। हम सभी इस कृति के माध्यम से दीपावली पूजन की समीचीन विधि से भक्ति आराधना करते हुए अतिशयकारी लाभ को प्राप्त करेंगे।

जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
वीर प्रभु को करके नमोस्तु, जग का मंगल होवे॥
रोशनी से रोशनी टकराये, अँधेरे का न हो सामना।
खुशियाँ आपके कदम चूमें, यही हमारी शुभकामना॥

– बा॰ ब्र॰ संजय, मुरैना

दीपावली

अनादिकाल से भरतक्षेत्र में अनंत चौबीसियाँ होती आयी हैं, इसी क्रम में इस युग में ऋषभनाथ से लेकर महावीर पर्यंत चौबीस तीर्थंकर हुए। तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के २५६ वर्ष साढ़े तीन माह के बाद अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी को कार्तिक सुदी अमावस्या को मोक्ष प्राप्त हुआ था तथा उनके प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम को आपराह्णिक काल में उसी दिन केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी इसी के प्रतीक रूप में कार्तिक वदी अमावस्या को दीपावली पर्व मनाया जाता है।

विधि—प्रातःकाल सूर्योदय के समय स्नानादि करके पवित्र वस्त्र पहिनकर जिनेन्द्र देव के मन्दिर में परिवार के साथ पहुँचकर जिनेन्द्र देव की वन्दना करनी चाहिए। तदुपरान्त थाली में अथवा मूलनायक की वेदी पर सोलह दीपक चार-चार बाती वाले जलाना चाहिए तथा भगवान महावीर स्वामी की पूजन, निर्वाणकाण्ड पढ़ने के पश्चात् महावीर स्वामी के मोक्षकल्याणक का अर्घ्य बोलकर निर्वाण लाडू अर्घ्य सहित चढ़ाना चाहिए।

घर पर दीपावली पूजन विधि

अपराह्नकाल गोधूली बेला (सायं ४ से ७ बजे तक) में घर के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) में अथवा घर के मुख्य कमरे में पूर्व की दीवार अथवा सुविधानुसार दीवार पर माण्डना (श्री, श्री, वाला) बनाकर चौकी के ऊपर जिनवाणी एवं भगवान महावीर स्वामी की तस्वीर रखनी चाहिए। घर के मुखिया अथवा किसी अन्य सदस्य को एवं सभी सदस्यों को पूजा के शुद्ध वस्त्र पहनकर दीपमालिका के बायीं तरफ आसन लगाकर बैठना चाहिए तथा सामने वाली चौकी पर सोलह दीपक जो कि सोलहकारण भावना के प्रतीक हैं। (इन्हीं सोलह कारण भावनाओं को भाकर तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध भगवान महावीर स्वामी ने किया था, इसी के प्रतीक स्वरूप सोलह दीपक चार-चार बातियों वाले जलाये जाते हैं। (१६X४=६४) यह ६४ का अंक चौसठ ऋद्धि का प्रतीक है। भगवान महावीर चौंसठ ऋद्धियों से युक्त थे इन्हीं के प्रतीक स्वरूप यह चौंसठ ज्योति जलायी जाती हैं। अतः सोलह दीपक चौंसठ बातियों से जलाकर दीपकों में शुद्ध देशी घी उपयुक्त होता है। घृत की अनुपलब्धि पर यथायोग्य शुद्ध तेलादि का प्रयोग किया जा सकता है।) दीपकों पर सोलह भावना अंकित करनी चाहिए। इन्हें जलाने के पश्चात् दीपावली पूजन, सरस्वती पूजन, चौंसठ ऋद्धि अर्घ्य,

धुली हुई अष्ट द्रव्य से चढ़ाना चाहिए। पूजन से पूर्व तिलक एवं मौली बन्धन सभी को करना चाहिए।

दुकान पर पूजन—इसी प्रकार दुकान पर भी पूजन करनी चाहिए अथवा लघुरूप में पंचपरमेष्ठी के प्रतीक रूप पाँच दीपक जलाकर पूजन करनी चाहिए।

पूजन विसर्जन—शांति पाठ एवं विसर्जन करके तदुपरान्त घर का एक व्यक्ति अथवा बारी-बारी सभी व्यक्ति मुख्य दीपक को अखण्ड जलाते हुए रात भर णमोकार मंत्र का जाप अथवा पाठ या भक्तामर आदि पाठ करते हुए व्यक्ति अनुसार रात्रि जागरण करना चाहिए, यदि रात्रि जागरण नहीं कर सकें तो कम से कम मुख्य दीपक में यथायोग्य घृत भरकर उसे जाली से ढँककर उसी स्थान पर रात भर जलने देना चाहिए। शेष दीपकों में से एक दीपक मन्दिर में भेज देना चाहिए। यदि निकट में कोई सम्बन्धी रहते हैं तो वहाँ भी दीपक भेजा जा सकता है। अथवा शेष दीपकों को घर के मुख्य दरवाजे पर एवं मुख्य-मुख्य स्थानों पर रखे जा सकते हैं। मिष्ठान्न आदि का वितरण करना है तो पूजा समाप्ति के पश्चात् पूजन स्थल से थोड़ा दूर हटकर वितरित कर ग्रहण कर सकते हैं।

पूजा के पश्चात् पूजन निर्माल्य सामग्री पशु-पक्षियों को अथवा मन्दिर के माली को दी जा सकती है।

चौबीस पत्तों की (आम या आशापाल) बन्दनवार बनाकर दरवाजे के बाहर बाँधनी चाहिए जो कि चौबीस तीर्थंकरों की प्रतीक है।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं चतुःषष्टि ऋद्धिभ्यो नमः।

निर्वाण लाडू चढ़ाने वाले दिन सायं को श्रावकगण अपने-अपने घरों में दीपावली पूजन करते हैं। दीपकों का मनोहर प्रकाश करते हैं। श्रीजिनमंदिर जी में व अपनी दुकानों पर दीपकों को सजाते हैं और मुदित होते हैं।

नोट—पटाखे कभी न चलायें, अनार, फुल्झड़ी, राकेट, चकरी आदि भी बिल्कुल न छोड़ें। इससे लाखों जीवों का घात होता है। पर्यावरण दूषित होता है। स्वयं को भी हानि हो जाती है।

सामग्री—अष्ट द्रव्य की थाली, दीपक, मंगल कलश, पीली सरसों, श्रीफल, शुद्ध धूप, कपूर, जिनवाणी, २ चौकी, २ पाटे, रोली, केशर घिसी हुई, कलम-दवात, नई बही।

विधि—सायंकाल को उत्तम गोधूली बेला में अपने मकान या दुकान के पवित्र स्थान में पूर्व या उत्तर की तरफ मुँह करके पूजा प्रारंभ करें।

एक पाटे पर चावल से स्वास्तिक बनाकर उस पर महावीर का मनोहर फोटो जिनवाणी, दीहिनी तरफ घी का दीपक, बाँई तरफ धूपदान, मध्य में मंगलकलश स्थापित करें।

एक पाटे पर अष्टद्रव्य की थाली, दूसरे पाटे पर द्रव्य चढ़ाने के लिए खाली थाली में स्वास्तिकादि बनाएँ।

पूजा गृहस्थाचार्य या कुटुम्ब के मुखिया को शुद्ध वस्त्र पहनकर करना चाहिए।

मुखिया के अभाव में घर के विशेष व्यक्ति को शुद्ध वस्त्र पहनाना चाहिए।

पूजन विधि—पूजन में बैठे हुए सभी सज्जनों का निम्न मंत्र बोलकर तिलक करें–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलं॥

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर सभी जनों को शुद्धि के लिए थोड़ा सा जल के हल्के छीटे दें–

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं ठः ठः हं सः स्वाहा।

सभी के दाहिने हाथ में निम्न मंत्र बोलकर रक्षासूत्र बाँधें–

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

सभी दिशाओं में बंद मुट्ठी से पुष्प क्षेपण करें –

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशात् आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशात् आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशात् आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशात् आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशात् आगतविघ्नान् निवारय निवारय मां रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटं किरिटं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्त्र-खण्डान कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द-छिन्द परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द क्षः क्षः हूं फट् स्वाहा। (यह मंत्र पढ़कर स्वयं के ऊपर और सभी के ऊपर पुष्प क्षेपण करें)

मंगल कलश स्थापना मंत्र

(पीले चावल से स्वस्तिक बनाकर मंगल कलश की यह मंत्र पढ़ते हुए स्थापना करें)

ॐ ह्रीं आद्यानामाद्ये मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे.....प्रदेशे....जिले.....नगरे श्रीवीर निर्वाण संवत्सरे..... कार्तिकमासे कृष्णपक्षे अमावस्यां संध्याकाले गौतम गणधर पूजायां सर्वविघ्ननिवारणार्थं शान्तयर्थं पुण्य संचयार्थं केवलज्ञान प्राप्त्यर्थं नवरत्न-गंध-पुष्पाक्षतादि-श्रीफल-शोभितं मङ्गलकलश-स्थापनं करोमि। झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

दीप प्रज्ज्वलन मंत्र

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिरहरं दीपं प्रज्ज्वलन करोमि।

शास्त्र स्थापना मंत्र

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः स्थापनं करोमि।

(बही में अंकित करें)

श्री महावीर स्वामिने नमः

शुभ ॐ लाभ

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्रीऋषभाय नमः। श्री महावीर स्वामिने नमः। श्री गौतम गणधराय नमः। श्री जिन मुखोद्भव सरस्वती देव्यै नमः। श्री केवलज्ञान लक्ष्मी देव्यै नमः।

श्री शुभ मिति कृष्ण-अमावस्या वीर निर्वाण संवत्.....विक्रम संवत्.....दिनाँक.....मास.....सन्.....ई.....वार को श्री (दुकान मालिक का नाम)......की (प्रतिष्ठान का नाम).....की बही का शुभ मुहूर्त किया।

(यह विधि करके दुकान के प्रमुख व्यक्ति को बही देवें और पुष्प क्षेपण करें।)

॥ इति शुभम् ॥

मंगलाष्टकम् स्तोत्र

[अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्॥]

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत-रत्नप्रभा-,
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाऽम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥१ ॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति - श्री - नगराऽधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥२॥

नाभेयादि - जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोतरा विंशति-
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥३॥

ये सर्वौषधिऋद्धयः सुतपसो वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशला येऽष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥४॥

ज्योतिर्व्यन्तर-भावनाऽमरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥५॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः, सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥६॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥७॥
यो गर्भाऽवतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥८॥
इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्चसुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि॥
[विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे,
सर्वोच्चं यमनं विनम्र परमं, सर्वार्थसिद्धिप्रदम्।
ज्ञानध्यानतपोभिरक्त मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयम्,
साकारं श्रमणं विशाल हृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरं॥]

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

किसी पाँव को लगे न ठोकर, इसलिए हम जलते हैं।
निश्चल हो चुपके-चुपके ही, अपने पथ पर चलते हैं॥
तुमसे भी यदि बने कभी तो, बस इतना ही कर देना।
जहाँ दिखाई पड़े अमावस, वहाँ रोशनी भर देना॥

राज-पाट छोड़कर फकीर हो गए।
साधना कर सागर से गंभीर हो गए॥
हम उजालों में भी आत्मा को देख ना सके।
वो अमावस की अँधेरी रात में महावीर हो गए॥

पूजन प्रारंभ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्त लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहन्त सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

श्री देव-शास्त्र-गुरु अर्घ्य (हरिगीतिका)

ले अष्ट द्रव्यों के सुमिश्रण, अर्घ्य ये तैयार हैं।
श्रद्धा समर्पण और भक्ति, भक्त के त्यौहार हैं॥
त्यौहार करके नाँच गा के, अर्घ्य अर्पित कर रहे।
जिनदेव गुरुवर शास्त्र भजने, हम नमोस्तु कर रहे॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो नमः अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं....।

चौबीसी अर्घ्य (लय-चौबीसी पूजा)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पायें आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ायें सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं.....।

जिनवाणी-सरस्वती अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, देके भैया, मुक्त करे।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भव सरस्वतीदेव्यै नमः अर्घ्यं.....।

ऋद्धिधारी मुनियों को अर्घ्य (अर्ध जोगीरासा)

सकल ऋद्धि मय ऋषि हो फिर भी, चहें मोक्षसुख आहा।
ऋद्धीश्वर को अर्घ्य चढ़ा हम, करें नमोस्तु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं सकलऋद्धिसंपन्न-सर्वमुनिभ्यो अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री समयसागरजी महाराज का अर्घ्य (शंभु)

आचार्य श्री के लघुनंदन, पहले निर्यापक श्रमण मुनि।
जो मूलाचार निभाकर के, श्री समयसार से आत्म गुणी॥
श्री शांति वीर शिव ज्ञान तथा, विद्यागुरु जैसे श्रद्धालय।
इसलिए नमोस्तु कर बोलें, आचार्य समयसागर की जय॥

ॐ ह्रूं नवाचार्य श्री समयसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...

गौतम गणधर स्वामी पूजन

(दोहा)

महावीर भगवान् को, कर नमोस्तु धर ध्यान।
गौतम गणधर को भजें, दीवाली निर्वाण॥

(ज्ञानोदय)

गुरु शिष्य भगवान् भक्त के, भारत से संबंध रहे।
महावीर गौतम गणधर से, भक्तों के अनुबंध रहे॥
सुबह वीर प्रभु मोक्ष पधारे, सो लाडू हम चढ़ा लिये।
गौतम बने केवली सो हम, दीप शाम को जला लिये॥
मिलके दीवाली उत्सव के, घर बाहर त्यौहार करें।
ज्ञान लक्ष्मी मोक्षलक्ष्मी, पाने जय-जयकार करें॥
गुरु बिन शिष्य अकेले तड़पे, अतः वेदना हरने को।
गौतम गुरु अब हृदय पधारो, अपने जैसे करने को॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पांजलिं...)

जन्म मृत्यु भव दुख सागर को, वीर पार कर मुक्त हुए।
ध्यान नाव से गौतम गणधर, ज्ञान चेतना युक्त हुए॥
गुरु शिष्यों की धारा पाने, हम तो जल की धार करें।
गौतम गुरु को करके नमोस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं....।

गुरु शिष्यों के रिश्ते ऐसे, जैसे महके चन्दन वन।
विनय प्रेम की छाया में फिर, शीतल हो तन मन चेतन॥
गुरु शिष्यों के रिश्ते पाने, हम तो चन्दन धार करें।
गौतम गुरु को करके नमोस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने संसारताप विनाशनाय चंदनं....।

जिनशासन की जिम्मेदारी, गौतम गणधर को देकर।
वीर हुए अक्षय अविनाशी, धर्म तीर्थ सबको देकर॥
नग्न निरम्बर संत न छूटें, सो चरणों में पुंज धरें।
गौतम गुरु को करके नमोस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्....।

शिष्य बाग खिलते तो उसके, गुरु माली वा मालिक हों॥
काम कीट फिर क्या कर ले जब, गुरु अपने संरक्षक हों॥
चेतन बाग खिले अपना भी, सो चरणों में पुष्प धरें।
गौतम गुरु को करके नमोस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि....।

गुरुवर निज अध्यात्म रसोई, केवल शिष्यों को परसें।
जिसके मुँह में पानी आये, वो दीक्षा लेने तरसें॥
गुरु शिष्यों के रस को चखने, पद में यह नैवेद्य धरें।
गौतम गुरु को करके नमोस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं....।

सुबह करें पावापुर उत्सव, लाडू चढ़ा के मंदिर में।
गोधूली बेला संध्या में, दीवाली हो घर-घर में॥
गुरु शिष्यों के दर्शन करने, दीप आरती रोज करें।
गौतम गुरु को करके नमोस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपं....।

विश्व विजेता भी डर जाते, देख कर्म के भाटों को।
आत्म विजेता कर्म पछाड़ें, खोलें मोक्ष कपाटों को॥
गुरु शिष्यों सा शौर्य दिखाने, धूप जला हम हवन करें।
गौतम गुरु को करके नमोस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अष्टकर्म दहनाय धूपं....।

गुरु शिष्यों की करते रक्षा, ज्ञान ध्यान की शिक्षा दे।
शिष्य करें गुरु आज्ञा पालन, गुरु चरणों में दीक्षा ले॥
यही बीज दे महा मोक्षफल, आओ! ऐसी फसल करें।
गौतम गुरु को करके नमोस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने मोक्षफल प्राप्तये फलं....।

क्या होगा अस्तित्व शिष्य का, यदि गुरु का आशीष नहीं।
शिष्य बिना गुरुदेव अधूरे, उज्ज्वल धर्म भविष्य नहीं॥
गुरु शिष्यों का मिलन अनोखा, इक दूजे का ध्यान धरें।
गौतम गुरु को करके नमोस्तु, दीवाली त्यौहार करें॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं....।

दिव्य ध्वनि मुख्यश्रोता गौतम गणधर अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

केवलज्ञानी महावीर जब, छ्यासठ दिन तक मौन रहे।
क्या कारण है इन्द्र विचारे, गणधर बिन ध्वनि कौन सहे॥
तब गौतम 'त्रैकाल्यं' आदिक, सूत्र अर्थ जब कर न सके।
समवसरण में मान-स्तंभ कर, मिथ्यादृष्टि रह न सके।

(दोहा)

एकम श्रावण कृष्ण को, गौतम हर कर मान।
शिष्य बने सो ध्वनि खिरी, शासन चला महान॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनि मुख्यश्रोता गौतम गणधर स्वामिने अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

दिव्य ध्वनि प्राप्त गौतम आदि ग्यारह गणधर अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

सुबह वीर प्रभु मोक्ष पधारे, हमको अतः वियोग मिला।
गौतम गणधर बने केवली, संध्या में संयोग मिला॥
कार्तिक कृष्ण अमावस्या को, दो पर्वों से निज खोजें।
गौतमादि ग्यारह गणधर को, करके नमोस्तु हम पूजें॥
भव्य-पुण्य से विहार करके, फिर जीवों को ज्ञान दिए।
क्षेत्र गुणावा पर जाकर के, निज-पर के कल्याण किए॥
मोक्ष बानवें वर्षों में पा, सिद्ध लोक को गमन किये।
गौतम गुरु को अर्घ्य चढ़ा हम, करके नमोस्तु नमन किये॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमादि-प्रभासपर्यन्त एकादश गणधरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

गौतम गणधर नाँव हैं, भवजल रहा अपार।
कर नमोस्तु जयमाल हो, होने को भवपार॥

(ज्ञानोदय)

तीन काल में तीन लोक में, तत्त्वों द्रव्य पदार्थों में।
मानव नित उत्सव प्रेमी है, मंगलमय परमार्थों में॥
दसलक्षण आदिक शाश्वत हैं, दीवाली नैमित्तिक है।
दीवाली की कथा समझ लो, जिसमें निहित आत्महित है॥१॥

वीर बने जब केवलज्ञानी, समवसरण की सभा सजी।
लेकिन छ्यासठ दिन तक प्रभु की, दिव्य देशना नहीं खिरी॥
शीघ्र इन्द्र ने अवधिज्ञान से, गणधर रहित सभा जानी।
कौन बनेगा गणधर प्रभु का, पता चला गौतम स्वामी॥२॥
ज्येष्ठ पुत्र जो पृथ्वी माँ के, ब्राह्मण थे वसुभूति पिता।
अग्निभूति अरु वायुभूति दो, इंद्रभूति के लघु भ्राता॥
वह विद्वान महा अभिमानी, फिर भी पांच शतक चेले।
वृद्ध विप्र का भेष इन्द्र धर, गौतमपुर की ओर चले॥३॥
इंद्रभूति से कहे इन्द्र कुछ, मेरी शंका दूर करो।
'त्रैकाल्यं' का सूत्र अर्थ कह, मुझ पर कृपा जरूर करो॥
इंद्रभूति जिन सूत्र श्रवण कर, सोचे तीन काल क्या हैं।
द्रव्य काय पदार्थ षट् लेश्या, व्रत गति समिति ज्ञान क्या हैं॥४॥
हुए निरुत्तर इंद्रभूति तो, बोले गुरु से मिलवाओ।
होगा जब शास्त्रार्थ वहीं पर, समाधान तब तुम पाओ॥
शिष्य पाँच सो तीनों भ्राता, वीर शरण में ज्यों आते।
देख मानस्तंभ मान हर, सम्यग्दर्शन पा जाते॥५॥
तत्क्षण ज्यों ही बने दिगंबर, ज्ञान मनःपर्यय पाये।
गौतमपुर के गौतम गणधर, प्रथम शिष्य तुम कहलाये॥
त्रेसठ ऋद्धिधारि शिष्य पा, छ्यासठ दिन के बाद अहा।
मिला वीर शासन हम सबको, दिव्य देशना खिरी महा ॥६॥
शिष्य पाँच सौ मुनिपद धारे, दोनों भाई बने गणधर।
राजगृही के विपुलाचल पर, प्रथम देशना को सुनकर॥
द्वादशांग अंतर्मुहूर्त में, गौतम गणधर गुँथित किये।
कुल ग्यारह गणधर के स्वामी, तीस वर्ष तक धर्म दिये॥७॥
कार्तिक कृष्ण अमावस प्रातः, वीरा को निर्वाण हुआ।
तब गौतम को पावापुर में, संध्या केवलज्ञान हुआ।
सुबह चढ़ा के सब जन लाडू, शाम मनाते दीवाली।
धर्म-लक्ष्मी दीपमालिका, पाई सबने खुशहाली॥८॥
क्षेत्र गुणावा में फिर जाकर, योग निरोध कर मुक्त हुए।

गुरु शिष्य के उत्सव पाकर, धन्य-धन्य हम भक्त हुए॥
गुरु शिष्य सिद्धत्व प्राप्त कर, कर्म रोग दुख नाश किये।
हमको मोक्ष घुमाएंगे प्रभु, ऐसा हम विश्वास किये॥९॥
ज्यों कोई अपनी संपत्ति, सौंपे नहीं नौकरों को।
यों ही हमको छोड़ न देना, खाने जगत ठोकरों को॥
वैर व्यसन निर्धनता हरकर, दिवस दशहरा कर देना।
वीरा गौतम सम उत्सव दे, रात दिवाली कर देना॥१०॥
गुरु शिष्यों के चरणों में ही, हर तीरथ का दर्शन हो।
सो दीवाली भज नयनों में, निर्मल सम्यग्दर्शन हो॥
सम्यग्ज्ञान पले वाणी में, चरण-चरण चारित्र चले।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, अंग-अंग वात्सल्य झरे॥११॥

(सोरठा)

गौतम प्रभु को ज्ञान, मिला वीर को पूजकर।
हम पाएँ निर्वाण, दीवाली को पूज कर॥

ॐ ह्रीं श्री गौतम गणधर स्वामिने अनर्घपद प्राप्तये जयमाला महार्घ्यं...।

(दोहा)

दीवाली के प्रभु करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजें भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, श्री गौतम गुरुराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

निर्वाण काण्ड

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
करके नमोस्तु हम कहें, पूज्यकाण्ड निर्वाण॥

(चौपाई)

अष्टापद से आदिअनंत, भरत बाहुबलि कर्म हनंत।
बाल बालमहा नागकुमार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥१॥
वासुपूज्य चंपापुर त्याग, महावीर पावापुर त्याग।
मुक्त हुए कर निज उद्धार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥२॥
गिरिनारी से नेमीनाथ, शंबु प्रद्युम्न अनिरुद्ध साथ।
कोटि बहत्तर सत सौ पार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥३॥
श्री सम्मेदशिखर से शेष, तीर्थंकर प्रभु बीस अशेष।
मोक्षमहल के खोले द्वार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥४॥
नगर तारवर से वरदत्त, मुनिवरांग मुनि सागरदत्त।
साढ़े तीन कोटि भव पार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥५॥
सात-सात बलभद्र विशेष, आठ कोटि यदुवंशि नरेश।
गजपंथा से मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥६॥
राम पुत्र लव कुश भव छोड़, लाट देश नृप पाँच करोड़।
पावागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥७॥
पाण्डव भीम युधिष्ठिर पार्थ, द्रविड़ आठ कोटि नृप साथ।
शत्रुंजय से मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥८॥
राम हनू सुग्रीव गवाक्ष, गवय नील महानील जिनाक्ष।
निन्यान्वें कोटि तुंगी पार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥९॥
नंग-अनंग कुमार प्रसिद्ध, साढ़े पाँच करोड़ सुसिद्ध।
सोनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥१०॥
रावण सुत सिद्धोदय छोड़, आदिक साढ़े पाँच करोड़।
रेवातट नेमावर पार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥११॥
रेवा पार्श्व सिद्धवरकूट, साढ़े तीन कोटि तज झूठ।
दो चक्री दस कामकुमार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥१२॥
बड़वानी की दक्षिण पीठ, कुंभकर्ण अरु इन्दरजीत।
चूलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥१३॥

स्वर्ण वीर मुनि गुण-मणिभद्र, नदी चेलना पूरव हद्द।
पावागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥१४॥
फलहोड़ी के पश्चिम भाग, शिखर द्रोणगिरि परभव त्याग।
गुरुदत्तादिक मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥१५॥
दिशा अचलपुर की ईशान, साढ़े तीन कोटि मुनि जान।
मुक्तागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥१६॥
वंशस्थल के पश्चिम घाट, कुलभूषण देशभूषण भ्रात।
कुंथलगिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥१७॥
दशरथ राज पाँच सौ पुत्र, हुये कलिंग देश से मुक्त।
कोटिशिला से कोटि पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥१८॥
गुरु वरदत्तादिक मुनि पाँच, पाकर समवसरण प्रभु पार्श्व।
नैनागिरि से मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥१९॥
राजगृही से विद्युतचोर, अष्टापद से अंजनचोर।
गौतम गये गुणावा पार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥२०॥
मथुरा से श्री जंबूस्वामि, कुण्डलपुर से श्रीधर नामि।
सेठ सुदर्शन पटना बिहार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥२१॥
अहारजी से मदनकुमार, विस्कंवल पहुँचे शिवद्वार।
सार्थक है जिनतीर्थ अहार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥२२॥
यम धन आदिक संत प्रसिद्ध, शौरि-बटेश्वर से जो सिद्ध।
कनकगिरि से श्रीधर राज, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥२३॥
जग में जितने भू-निर्वाण, गुफा नदी वन कन्दर थान।
भू नभ जल से मोक्ष पधार, जिनको नमोस्तु बारम्बार॥२४॥
कर निर्वाणकाण्ड के गान, 'सुव्रत' चाहें निज निर्वाण।
हो जाये जग का उद्धार, करके नमोस्तु बारम्बार॥२५॥

(दोहा)

जो पाये निर्वाण सुख, सिद्ध अनंतानंत।
करके नमोस्तु हम भजें, सिद्धक्षेत्र भगवंत॥

===

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिंब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित- अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥

तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शांति दें, करें विश्व कल्याण॥

(जल धारा...)

अपने उर में बह उठे, विश्व शांति की धार।
कर्मों के ग्रह शांति को, नमोस्तु बारम्बार॥

(चंदन धारा...)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रंथ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शांति आत्म शांति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधिं किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

महावीराष्टक स्तोत्र

(शिखरिणी)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥१॥
अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पन्द-रहितम्,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥२॥
नमन्नाकेन्द्राली मुकुटमणि भा-जाल-जटिलम्,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥३॥
यदर्चा - भावेन प्रमुदित - मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गण-समृद्धः सुख-निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमु तदा,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥४॥
कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत - तनुर्ज्ञान - निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुत-गतिर्-
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥५॥
यदीया वाग्गङ्गा विविधनयकल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥६॥
अनिर्वारोद्रेकस् - त्रिभुवनजयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन् नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥७॥

महामोहातङ्क प्रशमन - पराकस्मिकभिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदित - महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां भव - भयभृतामुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥८॥

(अनुष्टुप)

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्॥ ९॥

===

महावीराष्टक स्तोत्र (हिन्दी पद्यानुवाद)

(ज्ञानोदय)

जिनके ज्ञान रूप दर्पण में, ध्रौव्य नाश उत्पादमयी।
युगपद् प्रतिबिम्बित शोभित हों, जड़ चेतन के अर्थ सभी॥
जग साक्षी जो सूरज जैसे, शिवमग प्रतिपादक ज्ञानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥१॥
बिन लाली अनिमेष नयन हैं, कमल युगल सम जो रहते।
भीरत बाहर क्रोध नहीं है, प्रकट रूप से यह कहते॥
जिनकी मूरत परम शान्त है, अति निर्मल जग कल्याणी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥२॥
जिनके दोनों पद कमलों में, देवों की श्रेणी झुकतीं।
उनके मुकुटों की मणियों की, कांति जिन्हें शोभित करतीं॥
जग जन के भव ताप शांति को, जिनका बस सुमरण पानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥३॥
जिनकी पूजा के भावों से, मेढ़क प्रमुदित मन वाला।
इस जग में क्षणभर में देखो, बना देव सुख गुण वाला॥
तो तव भक्त मोक्ष सुख पाते, क्या इसमें अचरज स्वामी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥४॥
चमकित स्वर्ण कांति सम तन बिन, एकानेक आत्म ज्ञानी।
सिद्धारथ राजा के सुत जो, जन्म रहित हैं श्रीमानी॥
वीतराग भव राग बिना जो, अद्भुत गति है शिवधामी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥५॥

जिनकी शुचि वाणी की गंगा, विपुल ज्ञान के जल द्वारा।
जग जीवों को नहलाती है, बहु नय की लहरों द्वारा॥
ज्ञानी हंसों से परिचित यों, जाने जिनकी जिनवाणी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥६॥
जिनने कुमार काल दशा में, चमकित शान्त सदा सुख के।
पूज्य राज्य शिवपद पाने को, अपने आतम के बल से॥
दुर्जय पापी त्रिभुवन जेता, काम-सुभट जीता मानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥७॥
महामोह के रोग शमन को, आकस्मिक जो वैद्य रहे।
बिना उपेक्षा के बन्धू जो, मंगल महिमा सहित रहे॥
भव दुख से भयभीत जनों को, उत्तम गुण शरणादानी।
मेरे नयनों के वासी हों, महावीर वे जिन स्वामी॥८॥

(दोहा)

भागचंद अष्टक रचे, महावीर का स्तोत्र।
पढ़े सुने जो भक्ति से, पाय परम गति मोक्ष॥९॥
'सुव्रत' रचकर पद्य में, महावीर गुण गाय।
महावीर जल्दी बनूँ, सर्वोदय मन लाय॥१०॥

===

महावीराष्टक स्तोत्र (भावानुवाद)

(चौपाई)

लोकालोक झलकते ऐसे, जिनचेतन में दर्पण जैसे।
सूरज सम जो पथ दें ज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥१॥
अपलक लाल न जिनके नयना, क्रोध रहित भक्तों के गहना।
मूरत परम शान्त निज-ध्यानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥२॥
जिनको पूजें सुर मणिमाला, जिनकी याद हरे भव-ज्वाला।
जिनका सुमरण शीतल पानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥३॥
मेढ़क देव बना पूजन कर, तो जिन भक्त मोक्ष पाएँ फिर।
इसमें क्या आश्चर्य कहानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥४॥
तन है फिर भी ज्ञान सहित हैं, जन्म रहित सिद्धारथ सुत हैं।
एक अनेक धनी विज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥५॥

नय तरंग गंगा जिनवाणी, हमें ज्ञान जल दें कल्याणी।
दिखें आज भी हंसा ज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥६॥
महा मोक्ष पाने बचपन से, दुर्जय काम हरे निज बल से।
बने जितेन्द्री अंतर्यामी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥७॥
मोह रोग हर वैद्य तुम्हीं हो, मंगल कर जगबन्धु तुम्हीं हो।
साधु संत के शरणा दानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥८॥

(दोहा)

संस्कृत में अष्टक रचे, 'भागचंद' गुण गाएँ।
'सुव्रत' रच चौपाइयाँ, महावीर बन जाएँ॥

आरती-१

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
१. महावीर जिनशासन स्वामी, केवलज्ञानी अंतर्यामी-२
दीवाली वरदानी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
२. सिद्धारथ के राज दुलारे, त्रिशला की आँखों के तारे-२
कुण्डलपुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
३. कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
४. दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

आरती-२

ओम् जय महावीर प्रभु, स्वामी जय महावीर प्रभु।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानंद विभु॥ ओम् जय...
१. सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी। स्वामी...
बाल ब्रह्मचारी व्रत, पाल्यौ तपधारी॥ ओम् जय...
२. आतम ज्ञान विरागी, समदृष्टि धारी। स्वामी...
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी॥ ओम् जय...
३. जग में पाठ अहिंसा, आपहि विस्तार्यो। स्वामी...
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचार्यो॥ ओम् जय...

===